वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :5 अंक : 175 | शनिवार 18 अक्टूबर 2025 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

धनतेरस से पहले बाजार में धन की वर्षा

शनिवार को धनतेरस का पर्व मनाया जाएगा। दुकानदार से लेकर खरीददार तक धनवर्षा की तैयारी में जुट गए हैं। जयपुर के सभी प्रमुख बाजारों में विभिन्न प्रकार की दुकानें, मॉल जगमगा उठे हैं।

जयपुर में दीपोत्सव के त्यौहार पर बदली ट्रैफिक व्यवस्था

परकोटे में 21 अक्टूबर तक सिटी/मिनी बसों की रहेगी नो-एंट्री

जयपुर. शाबाश इंडिया

जयपुर में दीपावली पर्व पर मेन बाजारों में सजावट को देखते हुए ट्रैफिक व्यवस्था में बदलाव किया गया है। धनतेरस, रूपचतुर्दशी, दीपावली और गोवर्धन पूजा का त्योहार (17 अक्टूबर से 21 अक्टूबर) तक शहर में भारी वाहनों की नो एंट्री के साथ ही डायवर्ट कर निकाला जाएगा। डीसीपी (ट्रैफिक) सुमित मेहरड़ा ने बताया- दीपावली के त्योहार पर देसी-विदेशी पर्यटक, शहरवासियों की ओर से मेन बाजारों (परकोटा क्षेत्र) में खरीदारी करने और रोशनी की सजावट देखने के लिए काफी संख्या में आवागमन रहेगा। इस कारण मेन बाजारों और मेन रास्तों पर यातायात का दबाव ज्यादा रहने की संभावना है। इसको देखते हुए बाजारों में सजावट को लेकर यातायात के सुगम संचालन के लिए व्यवस्था की गई है।

भारी वाहनों की नो एंट्री

इस दौरान किसी भी प्रकार के माल वाहक वाहनों (साइकिल ट्रॉली, ठेले, बैलगाड़ी और ठेलों में लंबे पाइप, सरिए आदि से भरे हुए वाहन) का परकोटा, संसार चंद्र रोड़, एमआई रोड़, अशोका मार्ग, यादगार तिराहा से रामबाग चौराहा, एमडी रोड में प्रवेश पर पूरी तरह प्रतिबंध रहेगा। धनतेरस पर परकोटे में खरीदारी करने के लिए आने वाले देसी/विदेशी पर्यटक, शहरवासियों के वाहनों की पार्किंग व्यवस्था जेडीए की भूमिगत पार्किंग रामनिवास बाग, चौगान स्टेडियम के अंदर पार्किंग स्थल पर की जाएगी। जौहरी बाजार, हवामहल बाजार, रामगंज बाजार, त्रिपोलिया बाजार, चौड़ा रास्ता, किशनपोल बाजार, गणगौरी बाजार, चांदपोल बाजार में मुख्य मार्गों पर वाहनों की पार्किंग पर प्रतिबंध रहेगा।

शहर में ये रहेगी व्यवस्था

17 अक्टूबर से 21 अक्टूबर तक सुबह 11 बजे से रात 12 बजे तक किशनपोल बाजार, चांदपोल बाजार, गणगौरी बाजार, त्रिपोलिया बाजार, चौड़ा रास्ता, जौहरी बाजार, हवामहल बाजार, नेहरू बाजार, बापू बाजार में ई-रिक्शा नहीं चलेंगे। 17 अक्टूबर से 21 अक्टूबर तक सुबह 11 बजे से रात 12 बजे तक सिटी/मिनी बसों का संजय सर्किल, अजमेरी गेट, सांगानेरी गेट, घाटगेट, गलता गेट, धोबी घाट और रामगढ़ मोड़ से परकोटे में एंट्री पर प्रतिबंध रहेगा। जिन्हें आवश्यकतानुसार डायवर्ट कर समानान्तर मार्गों से निकाला जाएगा।

संयम, आत्मा की सर्वोच्च विजय : साध्वी जयश्री

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। जो बाहरी दुनिया को जीतने की दौड़ में उलझा रहता है, वह सच्ची मुक्ति नहीं पा सकता; केवल आत्मा की विजय ही जीवन का अंतिम लक्ष्य है। यह विचार शुक्रवार को शांति भवन में आयोजित धर्मसभा में उपप्रवर्तिनी महासती विजयप्रभा की शिष्या साध्वी जयश्री ने व्यक्त किए। साध्वी जयश्री ने कहा कि मनुष्य का असली आभूषण धन, पद या प्रतिष्ठा नहीं, बल्कि संयम है। उन्होंने बताया कि आज का मानव संसारिक सुखों और बाहरी भाग दौड़ में व्यस्त है, लेकिन जो अपने मन, वाणी और इंद्रियों पर विजय प्राप्त करता है, वही सच्चा विजेता है। साध्वी ने आगे कहा बाहरी विजय केवल क्षणिक संतोष देती है, जबकि आत्मविजय ही स्थायी सुख और मोक्ष का मार्ग है। यदि व्यक्ति अपनी इच्छाओं और लालसाओं को नियंत्रित कर सके, तो वह आत्मिक शांति, स्थिरता और जीवन में वास्तविक दिशा प्राप्त कर सकता है। शांति भवन के मंत्री नवरतनमल भलावत ने जानकारी देते हुए कहा कि बुधवार 22 अक्टूबर को भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक एवं गौतम स्वामी केवलज्ञान निर्वाण महोत्सव उपप्रवर्तिनी विजयप्रभा के सानिध्य में प्रातः 8 बजे से 9 बजे तक पूच्छीस्सुणं जाप होगा। इसके पश्चात दिवाली और नूतन वर्षाभिनंदन के अवसर पर साध्वी विजयप्रभा मंगलकारी मंगल पाठ प्रदान करेंगे।

-प्रवक्ता निलिष्का जैन

त्रिवेणी संगम पर अखिल भारतीय काव्य संगम का हुआ आयोजन

भोर तक बही काव्यधारा, मोहन पुरी को मिला प्रथम काव्यधारा अलंकरण

जयपुर. शाबाश इंडिया। मेवाड़ की गंगा त्रिवेणी संगम स्थित सुखवाल धर्मशाला प्रांगण में जिले के प्रतिष्ठित साहित्यिक मंच काव्यधारा मंच कदम द्वारा अखिल भारतीय काव्य संगम व दीपावली स्नेह मिलन समारोह का आयोजन किया गया। संस्थापक नवीन जैन नव ने बताया कि संस्था अध्यक्ष सत्यप्रकाश भारद्वाज की अध्यक्षता ख्याति प्राप्त कवि सत्येंद्र मंडेला के मुख्य आतिथ्य भेरूलाल सुनार मध्यप्रदेश, महेंद्र 'ललकार, शिवचरण शर्मा पारोली , ओम उज्ज्वल, लक्ष्मण शर्मा नैनवा, सुरेन 'सागर के विशिष्ठ आतिथ्य में अखिल भारतीय कवि संगम आयोजित हुआ। इस अवसर पर साहित्य क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए मोहन पुरी होड़ा को प्रथम काव्यधारा अलंकरण प्रदान किया गया। रात्रि 8 बजे से प्रातः 4 बजे तक चले कवि संगम का मनीष सुखवाल,अंशुमान आजाद, अजय 'हिंदुस्थानी' ने शानदार मंच संचालन किया। कार्यक्रम में अतिथियों के साथ साथ देश भर से आए 30 कवियों सुनील धाकड़,चेतन चारण,पूजा सालवी,विक्रम विभोर,मुकेश वैष्णव महाकाल मांडलगढ़, मनीष राज बादल' विशाल बृह्मभट्ट, योगेश योगिराज' अरविंद शर्मा,संपत साथी', ओम आदर्शी',योगेश त्रिपाठी.,डॉ सतीश जोशी, तेजशंकर राठौर आदि ने शानदार काव्य पाठ किया।

सत्य की गवेषणा ही श्रेष्ठ साधना: युवाचार्य महेंद्र ऋषिजी

उत्तराध्ययन सूत्र के 25वें और 26वें अध्ययन की गहन विवेचना

पनवेल. शाबाश इंडिया

जैन स्थानक में श्रमण संघीय युवाचार्य महेंद्र ऋषिजी महाराज ने पनवेल जैन स्थानक में श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र के 25वें और 26वें यज्ञीय अध्याय की गहन विवेचना करते हुए कहा, मुनि वह नहीं जो केवल भिक्षा की खोज में निकले, बल्कि वह है जो उत्तम अर्थ की गवेषणा में निरंतर प्रवृत्त रहता है। उन्होंने जयघोष और विजयघोष के संवाद के माध्यम से बताया कि संसार के अधिकांश संबंध स्वार्थ पर आधारित होते हैं। जयघोष मुनि को यह अनुभूति तब हुई जब उन्होंने देखा, सांप मेंढक को निगल रहा था, और मेंढक छोटे कीटों को पकड़ने की चेष्टा कर रहा था। इस दृश्य ने उन्हें संसार के स्वभाव का बोध कराया कि हर कोई अपने स्वार्थ में लिप्त है, किसी को दूसरों के दुःख की चिंता नहीं। इसी अनुभव ने उन्हें गृहस्थ जीवन से विरक्त कर संयममार्ग की ओर अग्रसर किया। वर्षों बाद जब वे वाराणसी पहुंचे, जहां उनका भाई विजयघोष ब्राह्मण बनकर महामृत्युंजय यज्ञ करा रहा था, तब एक महत्वपूर्ण संवाद हुआ। यजमानों द्वारा रोक दिए जाने पर मुनिश्री ने पूछा, क्या तुम वेदों के मुख को जानते हो? यज्ञों के प्रमुख को? नक्षत्रों के अधिपति को? धर्म के सार को? जब कोई उत्तर न दे सका, तब उन्होंने कहा कि वेदों का मुख अग्नि है, यज्ञों का मुख यजमान है, नक्षत्रों का मुख चंद्रमा है, और धर्म का मुख भगवान महावीर हैं। युवाचार्य प्रवर ने स्पष्ट किया कि सच्चा ब्राह्मण वही है जो क्रोध, झूठ, हिंसा और भोगों से मुक्त हो। जैसे कमल पानी में जन्म लेकर भी जल से अलिप्त रहता है, वैसे ही संयमी पुरुष भोगों में रहकर भी उनसे अछूता रहता है। उन्होंने कहा कि केवल सिर मुंडाने, वल्कल पहनने या वन में रहने से कोई श्रमण नहीं बनता। जो समता को धारण करे वही सच्चा श्रमण है, जो ब्रह्मचर्य में स्थित रहे वही ब्राह्मण है, जो ज्ञान को धारण करे वही मुनि है, और जो तप करता है वही तपस्वी है। जयघोष मुनि ने अपने भाई विजयघोष को समझाया कि भोगों में लिप्त चेतना कर्म से बँध जाती है, जबकि भोगों से अलिप्त चेतना को कर्म भी नहीं बांधते। यह सत्य जानकर विजयघोष ने भी संसार का त्याग किया और संयम मार्ग अपनाया। युवाचार्यश्री ने आगे समाचारी अध्ययन की व्याख्या करते हुए कहा कि साधु जीवन की मयार्दा और अनुशासन ही संघ की रीतिझ संहिता हैं। इसमें गुरु- शिष्य संबंध, वंदन, निवेदन, सेवा, स्वाध्याय, प्रतिलेखन और आवश्यक क्रियाओं की विधियां सम्मिलित हैं, जो साधु को दुःखों से विमुख कर संसार सागर से पार कराती हैं। उन्होंने बताया कि मुनि आहार गवेषणा के लिए केवल छह कारणों से ही निकलते हैं, वेदना की शांति, वृत्त की मयार्दा, संयम की रक्षा, प्राणों की सुरक्षा, धर्मचिंतन और शरीर पालन। इनके साथ प्रतिक्रमण, स्वाध्याय और ध्यान साधु जीवन को अनुशासित बनाते हैं। अंत में 27वें खल अध्ययन का उल्लेख करते हुए युवाचार्य प्रवर ने कहा, जैसे दुष्ट बैल रथ को तोड़ देता है, वैसे ही उद्दंड और असंयमी शिष्य धर्ममार्ग की प्रगति में बाधक बनते हैं। विवेचना के समापन पर युवाचार्यश्री ने कहा, केवल कर्मकांड करने से मुक्ति नहीं मिलती। यज्ञ का रहस्य समझो, उसके उद्देश्य को जानो। जब तक साधक सत्य का साक्षात्कार नहीं करता, तब तक उसकी साधना अधूरी रहती है। इस प्रकार जयघोषझ विजयघोष संवाद के माध्यम से युवाचार्य महेंद्र ऋषिजी ने जीवन का गूढ़ संदेश दिया कि सत्य की गवेषणा ही जीवन का परम प्रयोजन है। इस अवसर पर अनेक श्रद्धालुजनों ने उपवास, आयंबिल, एकासन आदि के प्रत्याख्यान लिए। साथ ही दीपावली पर पटाखे नहीं फोड़ने का युवाचार्यश्री से संकल्प लिए। सभा का संचालन मंत्री रणजीत सिंह काकरेचा ने किया।

-प्रवक्ता सुनिल चपलोत

विश्व वन्दनीय भगवान महावीर स्वामी का 2552वां मोक्ष कल्याणक 21 अक्टूबर को

जैन मित्र मण्डल ने घर घर पहुंचाए केवल्य लक्ष्मी पूजन पत्रक

मनोज जैन नायक. शाबाश इंडिया

मुरैना। जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का 2552 वां मोक्ष कल्याणक महोत्सव मंगलवार 21 अक्टूबर को विभिन्न धार्मिक कार्यक्रमों के साथ भक्ति भाव एवं हर्षोल्लास पूर्वक मनाया जाएगा। इस अवसर पर नगर के सभी जिनालयों में निर्वाण लाडू चढ़ाया जाएगा। इस अवसर पर नगर में विराजमान दिगम्बराचार्य आर्जवसागर महाराज के शिष्य मुनिश्री विलोकसागरजी एवं मुनिश्री विबोधसागरजी महाराज के पावन सान्निध्य में बड़े जैन मंदिर में मुख्य आयोजन होगा तथा शहर के अन्य जैन जिनालयों में भी पूजा अर्चना के विशेष आयोजन होंगे। जैन धर्म के अंतिम एवं 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी मोक्ष कल्याणक के पावन अवसर पर पूज्य युगल मुनिराजों के सान्निध्य में प्रातः 07 बजे भगवान महावीर स्वामी का सामूहिक रूप से स्वर्ण कलशों द्वारा जलाभिषेक एवं चांदी की झारियों द्वारा शांतिधारा की जाएगी । संगीत की मधुर धुन पर श्रद्धा एवं भक्ति के साथ अष्टद्रव्य से महावीर स्वामी का पूजन होगा । तत्पश्चात श्री भगवान महावीर स्वामी के श्री चरणों में मोक्ष लक्ष्मी की कामना के साथ निर्वाण लाडू अर्पित किया जाएगा। इस पावन अवसर पर पूज्य युगल मुनिराजों द्वारा भगवान महावीर स्वामी के व्यक्तित्व पर व्याख्यान दिया जाएगा। कार्यक्रम के अंत में पुण्यार्जक परिवारों को वर्षायोग कलश वितरित किए जाएंगे। शाम को महाआरती, गुरुभक्ति, शास्त्र सभा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे। **भगवान महावीर स्वामी का जीवन परिचय:** आज से 2624 वर्ष पूर्व भगवान महावीर स्वामी का जन्म बिहार के कुंडलपर ग्राम में राजा सिद्धार्थ और रानी त्रिशला के यहाँ हुआ था, जिनका बचपन का नाम वर्धमान था। 30 वर्ष की अल्प आयु में उन्होंने परिवार सांसारिक जीवन, सुख और राज-पाट त्याग कर जैनेश्वरी दीक्षा लेकर 12 वर्षों तक कठोर तपस्या की। 42 वर्ष की आयु में उन्हें केवल ज्ञान की प्राप्ति हुई और वे जिन (इंद्रियों को जीतने वाले) कहलाए। उन्होंने अपना शेष जीवन जैन धर्म के सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार में व्यतीत किया और 72 वर्ष की आयु में 2552 वर्ष पूर्व बिहार

के नालंदा जिले में पावापुरी से कार्तिक कृष्ण अमावस्या को निर्वाण प्राप्त किया था। पावापुरी में एक जल मंदिर है, जो उनके अंतिम संस्कार स्थल के रूप में जाना जाता है। **जैन समाज निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में मनाता है दीपावली:** जैन धर्मावलंबी दीपावली का त्यौहार भगवान महावीर के निर्वाण के उपलक्ष्य में श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाते हैं, इस दिन महावीर स्वमीर ने जन्म मृत्यु के चक्र से मुक्त होकर मोक्ष प्राप्त किया था । कार्तिक कृष्ण अमावस्या के दिन उन्हें पूर्ण ज्ञान और मुक्ति (मोक्ष) की प्राप्ति हुई थी । जैन धर्मग्रंथों में इसे दीपालिका कहा गया है, जिसका अर्थ है शरीर से निकलने वाला प्रकाश, और इस दिन को भगवान महावीर के प्रथम शिष्य गौतम गणधर को केवल ज्ञान की प्राप्ति के रूप में भी मनाया जाता है । जैन समाज में दिवाली मुख्य रूप से भगवान महावीर के निर्वाण दिवस के

रूप में मनाई जाती है । **जैन मित्र मण्डल ने घर-घर पहुंचाए पूजन पत्रक:** जैन समाज की सेवा भावी संस्था जैन मित्र मण्डल ने भगवान महावीर स्वामी के मोक्ष कल्याणक के अवसर पर समवशरण (केवल्य लक्ष्मी) पूजन पत्रक को घर घर पहुंचाने का अनुकरणीय कार्य किया है । जैन मित्र मण्डल के सदस्यों ने पूज्य युगल मुनिराजों के आशीर्वाद से पूजन पत्रक की एक हजार बहुरंगीन प्रतियां प्रिंट कराकर जैन समाज के प्रत्येक परिवार को पूजन हेतु प्रदान की । मित्र मण्डल के इस पुनीत कार्य की सभी ने प्रशंसा एवं सराहना की ।

वेद ज्ञान

समाज सेवा करने की एक लगन होती है

हर आदमी के जीवन में किसी न किसी बात की लगन होती है। यह लगन समाज सेवा से लेकर किसी भी प्रकार की हो सकती है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अनेक लोगों ने देश-प्रेम के चलते हंस-हंस कर प्राण गंवा दिए थे। अति यानी अधिकता नुकसानदेह होती है। किसी सीमा में रहकर यदि किसी प्रकार की लगन मन में लगा ली जाए तो यह जीवन को उमंगों से भर देती है। घर को, समाज या देश को बर्बाद कर देने वाले शौक अपने यहां वर्जित हैं। इनका त्याग स्वहित में भी जरूरी है। समाज है तो यहां लोग भी अनेक प्रकार के मिलेंगे। इन सबके शौक भी निश्चय ही अलग-अलग होंगे। यहां एक बात यह ध्यान देने योग्य है कि जो शौक सकारात्मक या रचनात्मक होते हैं, समाज उन्हें ही मान्यता देता है और लोग उसी की प्रशंसा भी करते हैं। जो शौक समाज में वर्जित हैं, जो विध्वंसात्मक हैं, जिनसे व्यक्ति या समष्टि को नुकसान पहुंचता है, उसका तुरंत परित्याग कर देना चाहिए। मुझे अच्छी तरह याद है कि एक असहाय और दीन व्यक्ति, जहां कहीं भी लावारिस लाशें देखता था, तुरंत लोगों से कुछ मांगकर उस लाश की अंत्येष्टि कर देता था। यह विचित्र प्रकार की लगन थी, लेकिन उसकी सोच सकारात्मक थी। समाज के लिए इसमें दया और करुणा का संदेश भी था। वह इस कर्म को भगवान की सेवा मानता था। उसके इस कार्य ने उसे सामान्य से खास व्यक्ति बना दिया, जबकि वह स्वयं लावारिस था। धरती उसका बिछौना और आसमान चादर था। उस व्यक्ति ने जीवन पर्यंत अपने इस शौक को जारी रखा। देश में अनेक लोगों ने अपने अच्छे शौकों के कारण बहुत ख्याति अर्जित की। चाहे वह विज्ञान का क्षेत्र हो या ज्ञान का। चाहे वह व्यक्ति का क्षेत्र हो या वैराग्य का। ज्ञानी को भगवान को जानने की लगन है तो वैज्ञानिक को मानवता की सेवा के लिए नए आविष्कारों की। इसी प्रकार भक्त भगवान के दर्शनों के लिए आतुर है तो विरागी त्याग को पराकाष्ठा पर पहुंचाने के लिए व्याकुल। भगवत चिंतन में मीरा और चैतन्य महाप्रभु इतने रम जाते थे कि नृत्य करने लगते थे। भगवान से उनकी लगन ही ऐसी थी। अच्छे लक्ष्यों और उद्देश्यों को सामने रखकर जो शौक पाले जाते हैं, वे समाज के लिए अनुकरणीय बन जाते हैं।

संपादकीय

गाजा में शांति का दिखावा और कत्लेआम का क्रूर सच

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प चाहे जितनी भी मसखरी करें, वैश्विक मंचों पर शेखी बघारें, या रूस जैसे देशों को 'टॉमहॉक' मिसाइलों की धमकी दें, लेकिन फिलिस्तीन के गाजा में शांति की जमीनी हकीकत भयावह बनी हुई है। शांति के सारे प्रयास तब तक निरर्थक रहेंगे, जब तक हमास के आतंकवादी हथियार नहीं डाल देते। राष्ट्रपति ट्रम्प ने यहाँ भी दावा किया है कि यदि हमास ने हथियार नहीं छोड़े, तो अमेरिका उसे निरस्त्र कर देगा। लेकिन

यह बयानबाजी खोखली साबित हो रही है, क्योंकि हालिया शांति-समझौते के बावजूद गाजा में खून-खराबा फिर से शुरू हो गया है। बेशक, एक युद्धविराम हुआ था जिसके तहत हमास ने 20 इजरायली बंधकों को रिहा किया और 4 शव सौंपे। इसके बदले में इजरायल ने भी लगभग 2000 फिलिस्तीनी कैदियों को रिहा किया, जिनमें कई आजीवन कारावास की सजा काट रहे थे। इस समझौते से उम्मीद की एक किरण जगी थी, लेकिन 11 से 13 अक्टूबर के बीच हमास ने इस उम्मीद को बेरहमी से कुचल दिया। उसके नकाबपोश आतंकियों ने आईएसआईएस की बर्बर शैली में 60 से अधिक लोगों को घुटनों के बल बिठाया और गोलियों से भून डाला। इन हत्याओं को जासूसी का नाम देकर जायज ठहराने की कोशिश की गई, लेकिन यह स्पष्ट रूप से एक नरसंहार था। ऐसी स्थिति में राष्ट्रपति ट्रम्प और कतर, मिस्र तथा तुर्किये जैसे मध्यस्थ देशों के शांति-प्रयास बेमानी लगते हैं। हमास के लिए शांति का अर्थ केवल फिलिस्तीन पर अपना वर्चस्व कायम करना है, न कि सह-अस्तित्व। क्या ट्रम्प और अरब देशों ने शांति का यही मसौदा तैयार किया था? हमास की यह क्रूरता इजरायली प्रधानमंत्री नेतन्याहू को गाजा पर फिर से पूर्ण सैन्य हमला करने के लिए विवश कर सकती है, जिससे शांति की बची-खुची संभावनाएं भी समाप्त हो जाएंगी। इस संकट की जड़ में अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की विफलता भी है। राष्ट्रपति ट्रम्प संयुक्त राष्ट्र से अब तक ऐसा कोई प्रस्ताव पारित नहीं करा पाए हैं, जो गाजा में हमास के निरस्त्रीकरण और सुरक्षा की निगरानी के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय शांति सेना का गठन कर सके। एक प्रभावी फिलिस्तीनी सुरक्षा बल का गठन भी केवल कागजों तक सीमित है। इसके अलावा, कई बुनियादी सवाल अनुत्तरित हैं। गाजा के पुनर्वास पर जो अरबों डॉलर खर्च होने हैं, वह राशि कहाँ से आएगी? उस फिलिस्तीनी कैबिनेट की नियुक्ति कौन करेगा जो अंततः गाजा का शासन चलाएगी? राष्ट्रपति ट्रम्प की अध्यक्षता में एक शांति-बोर्ड का गठन क्यों नहीं हो पाया, यह अपने आप में एक बड़ा प्रश्न है। इजरायल की अपनी राजनीतिक उलझनें हैं। क्या नेतन्याहू एक ऐसा गठबंधन बना सकते हैं जो एक नए फिलिस्तीनी प्राधिकरण के साथ मिलकर हमास को पूरी तरह से बाहर कर सके? या वे वही पुराना खेल जारी रखेंगे जो वह 1996 से अमेरिकी राष्ट्रपतियों के साथ खेलते आए हैं? इस बीच, हमास ने न केवल कत्लेआम जारी रखा है, बल्कि वह गाजा की सड़कों पर सशस्त्र गश्त कर यह दिखाने की कोशिश कर रहा है कि शासन आज भी उसी का है। -राकेश जैन गेदिका

परिदृश्य

अनिश्चितता का जहरीला मिश्रण

ट्रम्प और फेडरल रिजर्व की अजीब जुगलबंदी

के. रवींद्रन

गिरता तेल, चढ़ता सोना, अस्थिर डॉलर और गहराती व्यापारिक शत्रुता—यह एक ऐसा विस्फोटक मिश्रण है जो वैश्विक अर्थव्यवस्था में अनिश्चितता का जहर घोल रहा है। निवेशक हर दिन अपने पोर्टफोलियो को नए सिरे से संतुलित करने के लिए मजबूर हैं, क्योंकि उन्हें नहीं पता कि अगला नीतिगत झटका किस दिशा से आएगा। इस उथल-पुथल के केंद्र में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की अप्रत्याशित नीतियाँ हैं, जो इस तनाव को चरम पर ले जा रही हैं।

वैश्विक मंदी की आहट

पिछले कई हफ़्तों से खनिज तेल की कीमतों में लगातार गिरावट देखी जा रही है, जो पाँच महीनों के सबसे निचले स्तर पर पहुँच गई हैं। इसका सीधा संबंध ट्रम्प द्वारा चीनी वस्तुओं पर 100% टैरिफ लगाने की धमकी से है, जिसने उस व्यापार युद्ध को फिर से हवा दे दी है जिसे बाजार भुला चुके थे। ऊर्जा व्यापारी अब एक कमजोर वैश्विक व्यापार के खतरे का सामना कर रहे हैं। उन्हें डर है कि अगर अमेरिका और चीन का टैरिफ युद्ध फिर से शुरू होता है, तो औद्योगिक गतिविधियाँ धीमी पड़ जाएँगी, जिससे कच्चे तेल की खपत घट जाएगी। अमेरिका में बढ़ते तेल भंडार और ओपेक देशों द्वारा उत्पादन कोटा का उल्लंघन करने के संकेतों ने इस डर को और बढ़ा दिया है। जब आपूर्ति बढ़ती है और माँग गिरने का अंदेशा हो, तो तेल का गिरना लगभग तय हो जाता है। कहानी यहीं खत्म नहीं होती। तेल की गिरावट उस दूसरी कहानी को और चमका रही है, जो सोने के सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुँचने की है। जो निवेशक पहले ऊर्जा या शेयरों में सुरक्षित महसूस करते थे, वे अब उस संपत्ति की ओर भाग रहे हैं जो डर और अनिश्चितता के माहौल में सबसे ज्यादा फलता-फूलता है। जब दुनिया की दो सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के बीच टकराव बढ़ता है और केंद्रीय बैंक मौद्रिक नीति में ढील के संकेत देते हैं, तो सोने का आकर्षण अजेय हो जाता है। यह पारंपरिक 'सुरक्षित-आश्रय' व्यवहार है: जब दुनिया अस्थिर दिखती है, तो पैसा उस एकमात्र वस्तु की ओर बहता है जिसने ऐतिहासिक रूप से कभी धोखा नहीं दिया।

धनतेरसः समृद्धि का नहीं, संवेदना का उत्सव

(आभूषणों से ज्यादा मन का सौंदर्य जरूरी, मन की गरीबी है सबसे बड़ी दरिद्रता।)

डॉ. सत्यवान सौरभ

धनतेरस का नाम लेते ही आंखों के सामने दीपों की उजास, सोने-चांदी की झिलमिलाहट, बाजारों का रौनकभरा शोर और पूजा की तैयारियों में जुटे घर-घर के दृश्य उभर आते हैं। यह दिन न केवल खरीदारी का त्योहार है, बल्कि भारतीय संस्कृति के गहरे दर्शन का प्रतीक भी है। यह वह दिन है जब लोग मानते हैं कि लक्ष्मी माता घर आएंगी, समृद्धि का आशीर्वाद देंगी, और दुर्भाग्य के अंधकार को मिटा देंगी। परंतु अगर हम इस पर्व के पीछे के दर्शन को गहराई से देखें, तो पाएंगे कि धनतेरस का अर्थ केवल सोना-चांदी खरीदना नहीं, बल्कि धन की सही परिभाषा को समझना है। धन शब्द संस्कृत के धना से बना है, जिसका अर्थ केवल संपत्ति या पैसा नहीं बल्कि समृद्धि, सुख और संतोष का संगम है। प्राचीन ग्रंथों में धनतेरस को धनत्रयोदशी कहा गया है – अर्थात धन और स्वास्थ्य दोनों की कामना का दिन। इसी दिन समुद्र मंथन से धनवंतरि देवता अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे, जिन्होंने मानवता को स्वास्थ्य का वरदान दिया। यही कारण है कि इस दिन को आयुर्वेद दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। जब दुनिया धन को केवल भौतिक संपत्ति के रूप में देखती है, तब भारतीय दर्शन इसे शरीर, मन और आत्मा की समृद्धि के रूप में देखता है। आज के समय में धनतेरस का रूप काफी बदल गया है। पहले जहां यह दिन दीप जलाने, घर साफ करने और देवी-देवताओं की पूजा का होता था, अब यह दिन शॉपिंग मॉल और ऑनलाइन सेल का प्रतीक बन गया है। धनतेरस आते ही लोग सोना, चांदी, कार, बाइक, फ्रिज, टीवी, मोबाइल—सब कुछ खरीदने की होड़ में लग जाते हैं। लेकिन क्या यही असली धन है? क्या केवल महंगी वस्तुएं खरीदकर हम सच में समृद्ध हो जाते हैं? शायद नहीं। असली समृद्धि तो उस मन में है जो संतोष जानता है, उस घर में है जहाँ प्रेम की दीवारें मजबूत हैं, और उस समाज में है जहाँ सभी के पास रोटी, कपड़ा और सम्मान हो। धनतेरस हमें यह भी सिखाता है कि धन का उपयोग कैसा हो। जब धन भगवान धनवंतरि से जुड़ा हुआ है, तो इसका अर्थ यह भी है कि धन स्वास्थ्य और जीवन की रक्षा के लिए होना चाहिए, न कि दिखावे और व्यर्थ विलासिता के लिए। लेकिन आज की हकीकत यह है कि लोग धनतेरस पर नई चीजें खरीदने के लिए कर्ज तक ले लेते हैं। त्योहार खुशियों का होना चाहिए, पर वह तनाव और तुलना का माध्यम बन जाता है। सोशल मीडिया पर कौन कितना खरीद रहा है, किसने कौन-सी गाड़ी ली—यह तुलना हमें भीतर से खोखला कर देती है। असली पूजा तो तब है जब हम अपने जीवन में संतुलन और संयम को जगह दें। एक समय था जब धनतेरस के अवसर पर लोग मिट्टी के दीप, तांबे या पीतल के बर्तन खरीदते थे। यह परंपरा केवल प्रतीकात्मक नहीं थी, बल्कि वैज्ञानिक और सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण थी। मिट्टी के दीप अंधकार मिटाने का प्रतीक हैं, और धातु के बर्तन स्वास्थ्य व सकारात्मक ऊर्जा का। लेकिन अब इन बर्तनों की जगह चमकदार चाइनीज लाइट्स और प्लास्टिक के सजावटी सामान ने ले ली है। पहले जहां घरों में शुभ-लाभ लिखकर दीवारें सजी होती थीं, अब डिस्काउंट और कैशबैक के बोर्ड झिलमिला रहे हैं। यह बदलाव केवल बाहरी नहीं, बल्कि हमारे भीतर के मूल्यबोध में भी आया है। धनतेरस का एक और गहरा संदेश है—धन और धर्म के संतुलन का। यदि धन अधर्म के मार्ग से अर्जित किया गया है, तो वह कभी सुख नहीं दे सकता। महाभारत में कहा गया है—ह्लधनं धर्मेण सञ्चयेत्ह्व यानी धन को धर्म के मार्ग से अर्जित करो। आज जब समाज में भ्रष्टाचार, लालच और अनैतिक कमाई बढ़ रही है, तब धनतेरस हमें याद दिलाता है कि असली पूजा वह नहीं जो सोने के दीपक से हो, बल्कि वह है जो ईमानदारी और परिश्रम से कमाए धन से की जाए। इस दिन जब हम दीप जलाते हैं, तो वह केवल बाहर का अंधकार नहीं मिटाता, बल्कि भीतर के लालच, ईर्ष्या और मोह के अंधकार को भी दूर करने का संदेश देता है। इस पर्व का एक आयुर्वेदिक और वैज्ञानिक पक्ष भी है। कार्तिक मास की त्रयोदशी के दिन मौसम बदलता है, सर्दी की शुरूआत होती है, और शरीर में रोगों की संभावना बढ़ जाती है। ऐसे समय में भगवान धनवंतरि की पूजा करना इस बात का प्रतीक है कि हमें अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। धनतेरस का अर्थ केवल धन प्राप्ति नहीं, बल्कि दीर्घायु, स्वास्थ्य और मानसिक संतुलन की प्राप्ति भी है। जब शरीर स्वस्थ होगा, तभी जीवन में वास्तविक सुख और समृद्धि होगी। अगर हम अपने पुरखों की जीवनशैली देखें, तो वे त्योहारों को केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं मानते थे, बल्कि सामाजिक समरसता और पर्यावरण संतुलन का अवसर भी समझते थे। धनतेरस के दिन घरों की सफाई का चलन केवल देवी लक्ष्मी के स्वागत के लिए नहीं, बल्कि स्वच्छता के प्रतीक के रूप में भी था। दीप जलाना केवल अंधकार हटाने के लिए नहीं, बल्कि प्रदूषण कम करने और वातावरण को पवित्र करने का एक उपाय भी था। लेकिन आज सफाई की जगह सजावट ने ले ली है, और पवित्रता की जगह दिखावे ने। धनतेरस समाज में समानता का भी प्रतीक रहा है। पुराने समय में अमीर-गरीब सभी इस दिन अपने घरों में दीप जलाते थे। किसी के पास सोना-चांदी न हो तो वह मिट्टी का दीपक जलाकर भी अपनी श्रद्धा प्रकट करता था। आज यह भाव कम होता जा रहा है। त्योहार जो कभी सबको जोड़ता था, अब वर्गों में बाँट रहा है। मॉलों की चकाचौंध में झुग्गियों की अंधेरी रातें दब जाती हैं। यह सोचने की बात है कि अगर लक्ष्मी सच्चे मन से हर घर में आती हैं, तो इतने लोग भूखे क्यों हैं? इतने किसान कर्ज में क्यों मर रहे हैं? क्या हमने लक्ष्मी को केवल अमीरों की देवी बना दिया है? धनतेरस का वास्तविक संदेश यही है कि हमें धन का सही उपयोग करना सीखना चाहिए। यह दिन हमें यह सोचने का अवसर देता है कि हमारा धन कितने लोगों के जीवन में रोशनी लाता है। अगर हम अपने धन से किसी गरीब की मदद करें, किसी बीमार के इलाज में सहयोग दें, किसी जरूरतमंद बच्चे की पढ़ाई में योगदान दें—तो वही असली धनतेरस होगी। लक्ष्मी तभी स्थायी होती हैं जब उनका उपयोग दूसरों की भलाई में होता है। वरना वह केवल कुछ समय की झिलमिलाहट बनकर रह जाती हैं। आज के युग में जब हम डिजिटल भुगतान, ऑनलाइन शॉपिंग और कृत्रिम रोशनी के बीच धनतेरस मना रहे हैं, तब यह और भी जरूरी है कि हम इस पर्व की आत्मा को पहचानें। यह पर्व हमें अपने घर हम धन को साधन बनाएँ, साध्य नहीं, तो वह जीवन में सौंदर्य और संतोष दोनों लाता है। लेकिन अगर वही धन हमें दूसरों से श्रेष्ठ दिखने की दौड़ में ले जाए, तो वह वरदान नहीं, अभिशाप बन जाता है। आज के समय में शायद सबसे बड़ा धन यह है कि हम अपनी मानसिक शांति को बचा पाएँ। परिवार के साथ बैठकर मुस्कुरा सकें, कुछ समय अपनों को दे सकें, बुजुर्गों के चरण छूकर आशीर्वाद ले सकें—यह भी धनतेरस का ही भाव है। क्योंकि जो घर प्रेम और सम्मान से भरा हो, वहाँ लक्ष्मी अपने आप आ जाती हैं। त्योहारों की असली चमक सोने या चांदी की नहीं होती, वह मन की निर्मलता में होती है। दीपों की रोशनी बाहर तभी फैलेगी जब भीतर के दीप प्रज्वलित हों। इसलिए इस धनतेरस पर अगर आप कुछ खरीदना ही चाहें, तो अपने लिए संयम, करुणा और संतोष खरीदिए। यह वे अमूल्य वस्तुएं हैं जो कभी पुरानी नहीं पड़तीं, कभी चोरी नहीं होतीं, और जीवनभर समृद्धि देती हैं। धनतेरस का यह पर्व हमें हर वर्ष यह याद दिलाता है कि समृद्धि केवल धनवान बनने में नहीं, बल्कि मनवान बनने में है। जब हम अपने कर्मों से दूसरों के जीवन में प्रकाश फैलाते हैं, जब हम अपनी कमाई से किसी का अंधकार मिटाते हैं—तभी सच्चे अर्थों में धनतेरस होती है। इसलिए दीप जलाइए, पर साथ ही किसी और के जीवन में भी उम्मीद का दीप जलाइए। यही इस पर्व का सबसे सुंदर संदेश है।

के साथ-साथ अपने मन का भी क्लीनिंग डे बनाने का अवसर देता है। अपने भीतर के लोभ, ईर्ष्या, स्वार्थ और दिखावे की धूल झाड़कर अगर हम मन में करुणा, ईमानदारी और प्रेम के दीप जला सकें, तो वही सच्चा धनतेरस होगा। धनतेरस केवल एक दिन नहीं, एक दृष्टिकोण है—जीवन को संतुलित, स्वास्थ्यपूर्ण और अर्थपूर्ण बनाने का दृष्टिकोण। यह हमें सिखाता है कि धन का मूल्य उसकी मात्रा में नहीं, बल्कि उसके प्रयोग में है। अगर

धनतेरस का अर्थ केवल 'धन' नहीं बल्कि 'ध्यान' भी है – ध्यान उस पर जो हमारे जीवन को सार्थक बनाता है। यह त्योहार हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि समृद्धि का असली अर्थ क्या है। अगर घर में प्रेम है, परिवार में एकता है, मन में शांति है, और समाज में करुणा है—तो यही सबसे बडा धन है। इसलिए इस धनतेरस पर केवल चाँदी की चमक नहीं, अपने मन की उजास बढ़ाइए। अपने भीतर के अंधकार को पहचानिए और प्रेम, संयम और सेवा का दीप जलाइए। यही होगी असली पूजा—जहाँ लक्ष्मी केवल तिजोरी में नहीं, व्यवहार में भी बसती है।

मिलेजुले प्रयासों से सभी लक्ष्य प्राप्त किए जा सकते है..मधु पाटनी

अजमेर. शाबाश इंडिया। मिले जुले प्रयासों से सर्वोच्च लक्ष्य की प्राप्ति संभव है अजमेर की विभिन्न क्षेत्रों में इकाइयों की सदस्याओं द्वारा धार्मिक एवं सामाजिक सरोकार के कार्यों को सामूहिक प्रयासों से सफलता से संपन्न कराया जाना संभव हो रहा है यह कहा समिति की राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष मधु पाटनी ने। श्री दिगंबर जैन महासमिति महिला एवम युवामहिला संभाग अजमेर की जाटियावास इकाई द्वारा समिति की राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष मधु पाटनी का महासमिति के मध्य प्रदेश के अशोक नगर में परम पूज्य 108 पुंगव मुनि श्री सुधासागर जी महामुनिराज के सानिध्य में आयोजित राष्ट्रीय महिला अधिवेशन में समिति की राष्ट्रीय अध्यक्ष शीला डोडिया,महामंत्री इंदु गांधी एवं केंद्र के अन्य पदाधिकारियों द्वारा ''नारी गौरव'' सम्मान से सम्मानित किए जाने पर माल्यार्पण कर एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मान किया। इकाई अध्यक्ष मैना बडजात्या एवं मंत्री पूजा काला ने बताया कि महिला महासमिति अजमेर की अध्यक्ष जोकि समिति की राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष है ने अपनी कार्य शैली से धार्मिक कार्य के साथ साथ सामाजिक एवं अन्य कार्यों में अपना सर्वोच्च नेतृत्व प्रदान किया है। जिससे अजमेर संभाग का नाम पूरे राष्ट्र में जाना गया है। युवा महिला संभाग अध्यक्ष सोनिका भैंसा ने इकाई की सदस्याओं के प्रति आभार ज्ञापित करते हुए बताया कि इस अवसर पर ईकाई अध्यक्ष मैना बडजात्या, मंत्री पूजा काला,पूर्व अध्यक्ष मोना पाटनी एवं प्रेम सेठी आदि मौजूद रही।

पद्मावती पब्लिक स्कूल मानसरोवर में दीपावली उत्सव मनाया गया

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री महावीर दिगम्बर जैन शिक्षा परिषद द्वारा संचालित मानसरोवर स्थित पद्मावती पब्लिक स्कूल में दीपावली का उत्सव बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर नन्हे-मुन्ने बच्चों ने सुंदर दीप सजाए, रंग-बिरंगी रंगोली बनाई और आकर्षक शुभकामना कार्ड तैयार किए। विद्यार्थियों ने अपने द्वारा बनाए गए कार्ड्स के माध्यम से अभिभावकों को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ दीं। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों ने मनमोहक सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ भी दीं, जिससे पूरे वातावरण में उल्लास और आनंद छा गया। अंत में सभी ने पर्यावरण अनुकूल दीपावली मनाने का संकल्प लिया और प्रेम, प्रकाश व स्वच्छता का संदेश दिया। प्राचार्या श्रीमती हेमलता जैन नें सभी को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाये प्रेषित की।

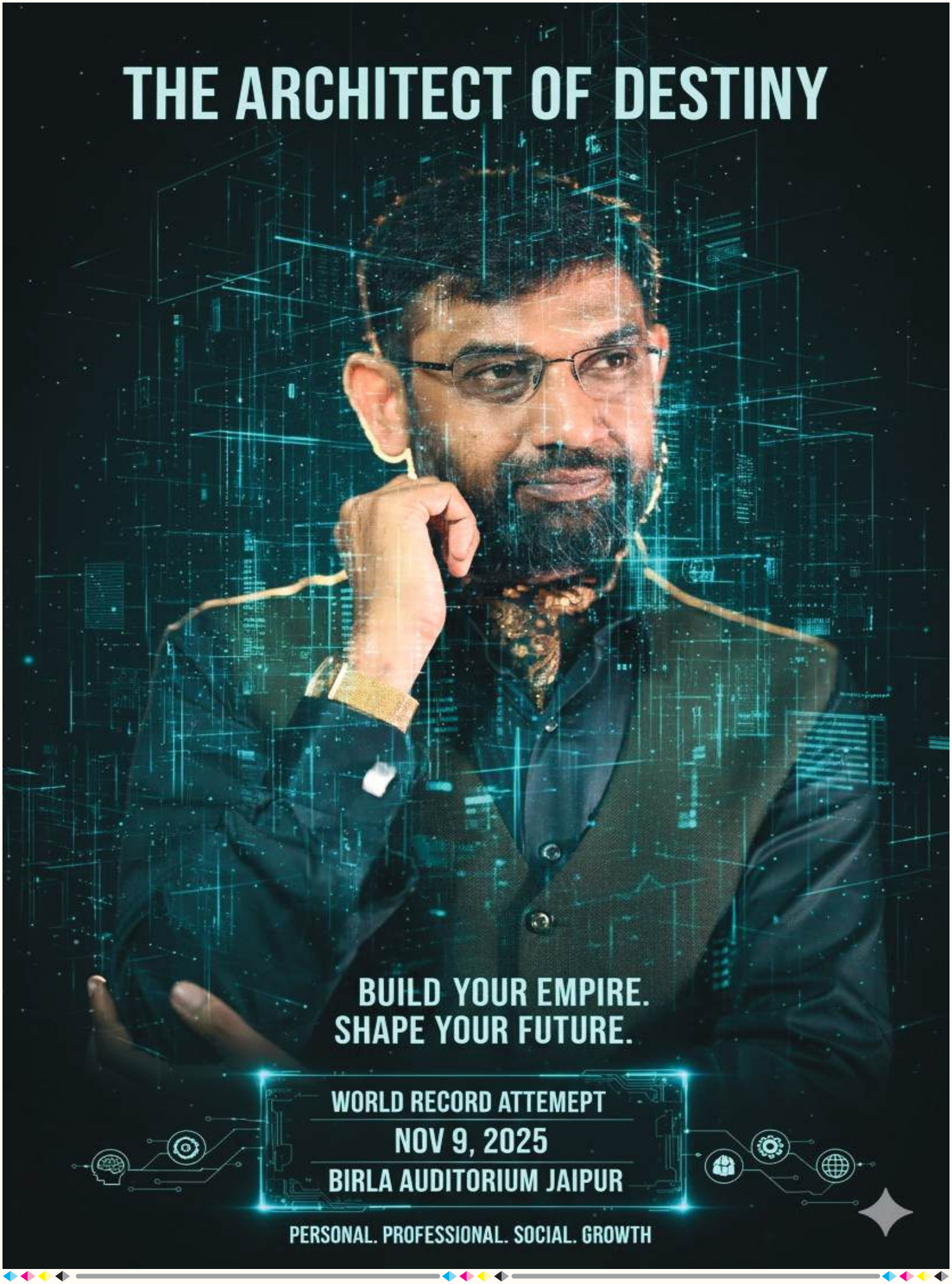
THE ARCHITECT OF DESTINY
BUILD YOUR EMPIRE.
SHAPE YOUR FUTURE.
WORLD RECORD ATTEMEPT
NOV 9, 2025
BIRLA AUDITORIUM JAIPUR
PERSONAL. PROFESSIONAL. SOCIAL. GROWTH

कलिकाल में तप की महिमा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विषय पर सांगानेर जयपुर में होगा मंथन

26 अक्टूबर को जैन मंदिर चित्रकूट, सांगानेर में जैन पत्रकार संगोष्ठी

जयपुर. शाबाश इंडिया। परम पूज्य तपस्वी सम्राट आचार्य श्री 108 सन्मति सागर जी महाराज के सुयोग्य शिष्य परम प्रभावक, दिव्य तपस्वी, राष्ट्र संत आचार्य श्री सुंदर सागर जी महाराज ससंघ सानिध्य में ''विशाल जैन पत्रकार संगोष्ठी'' 26 अक्टूबर 2025 रविवार को श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर चित्रकूट कॉलोनी सांगानेर थाना जयपुर में मन्दिर प्रबन्ध समिति चित्रकूट, सांगानेर जयपुर के तत्वावधान में व जैन पत्रकार महासंघ (रजि) के संयोजन में आयोजित की गई है। जैन पत्रकार महासंघ के राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन ने अवगत कराया कि संगोष्ठी/पत्रकार सम्मेलन प्रातः 8 बजे से पत्रकारों का रजिस्ट्रेशन के साथ प्रथम सत्र जिसमें मंगलाचरण , दीप प्रज्ज्वलन , आचार्य श्री का पाद् प्रक्षालन , मुख्य वक्ता का उद्बोधन, आचार्य श्री का मंगल प्रवचन आदि , द्वितीय सत्र में पत्रकार संवाद कार्यक्रम 1.30बजे से , तृतीय सत्र - सम्मान व समापन 3 बजे से 5 बजे तक रहेगा। राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश जैन तिजारिया की अध्यक्षता में चित्रकूट मन्दिर में व्यवस्था सम्बन्धी मीटिंग हुई जिसमें कार्यक्रम मुख्य संयोजक दीपक गोधा प्रताप नगर, कार्यक्रम संयोजक चक्रेश जैन समाचार जगत, राजा बाबू गोधा फागी को बनाया गया। मीटिंग में विभिन्न बिंदुओं पर मंथन हुआ जिसमें राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष दिलीप जैन ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि संगोष्ठी में जैन धर्म, पत्रकारों के हित, समाज से जुड़े महत्वपूर्ण विषयों पर विचार विमर्श होगा। मीटिंग में राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश जैन तिजारिया ने कहा कि उक्त संगोष्ठी में विभिन्न स्थानों से जैन पत्रकार व चिंतक शामिल होंगे जो संगोष्ठी के महत्वपूर्ण विषय पर चिंतन व मन्थन करेंगे। मीटिंग में मन्दिर प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष अनिल जैन काशीपुरा वाले, परवेश जैन सांगानेर , दीपक गोधा, राजाबाबू गोधा,बिमल बज, राजेश चौधरी आदि उपस्थित थे।

मीटिंग के पश्चात आचार्य श्री से चर्चा हुई और आशीर्वाद प्राप्त किया।

हक की बात बोलने के लिए कलेजा चाहिए...

तलवे चाटने वाले के लिये, एक जीभ ही बहुत है : अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज

तरुणसागरम तीर्थ, गाजियाबाद। अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज एवं उपाध्याय पियूष सागरजी महाराज ससंघ तरुणसागरम तीर्थ पर वर्षायोग हेतु विराजमान हैं आज योग गुरु रामदेव बाबा ने परम पूज्य गुरुदेव अंतर्मना गुरुदेव प्रसन्न सागर जी महाराज श्री से तरुण सागरम तीर्थ पर आशीर्वाद प्राप्त किया उनके साथ में मनोज त्यागी संस्कार, आस्था चेनल सीईओ ओर एसके जेन तिजारा जी मिडिया प्रभारी पतंजलि आदि की उपस्थिति थी उनको सभी को संबोधित करते हुए आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी महाराज ने कहा कि हक की बात बोलने के लिए कलेजा चाहिए.. तलवे चाटने वाले के लिये, एक जीभ ही बहुत है..! यह ज़िन्दगी एक अमानत है। सावधान रहिये! चित्त की चौकसी ही परम ज्योति को पाने का द्वार है। अभी तुम एक पत्थर हो। परमात्मा के घटते ही सब पत्थर प्रतिमाएं बन जाते हैं। तुम प्रतिमा बन सकते हो क्योंकि तुममे प्रभु बनने की प्रतिभा है। प्रभु बनना है तो मन को माजना होगा। केवल तन को माजना ही पर्याप्त नहीं है। तन को क्यों माजना? तन को माजना तो ऐसा ही है जैसे-कोयला धोया दूध से, निकला इतना सार। कोयला तो उजला नहीं, दूध गया बेकार। मन को माजो तो कोई बहादुरी होगी। मन को माज कर ही तो कोई वीर, अतिवीर और महावीर बन पाता है। सिकन्दर जैसे विश्व विजेता तो इस पृथ्वी पर बहुत हुए, लेकिन मन के किले पर फतह करने वाले महावीर तो कुछेक ही है। सिकन्दर ₹विश्व-विजेता₹ का प्रतीक है तो महावीर 'आत्म-विजय' के प्रतीक हैं। सिकन्दर और महावीर में बस इतना ही अन्तर है कि एक विश्व विजेता है परन्तु स्वयं से हारा है,, दूसरा आत्म विजेता है मगर विश्व का मसीहा है। जो जाग गया, वह महावीर बन गया और जो ना जाग पाया, सोये सोये जिया और सोये सोये ही मर गया, वह सिकन्दर बन गया। कहीं आप सिकन्दर तो नहीं है? क्योंकि - सच्चाई के रास्ते पर चलने में ही फायदा है। क्योंकि - सत्य की राह पर भेड़ों की भीड़ नहीं मिलती...!

-नरेंद्र अजमेरा पियुष कासलीवाल औरंगाबाद

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com | weeklyshabaas@gmail.com

आधुनिक विवाह: संस्कार नहीं, पैसा उगाने का खेल

आजकल की शादी कोई पवित्र संस्कार नहीं रही। यह केवल कैटरर्स और बैंकट हॉल वालों की कमाई का माध्यम बन गई है। 1500 - 3000 रुपये प्रति प्लेट, लाखों रुपये का बैंकट, खाना आधा खराब, आधा फेंका जाता है, लेकिन दिखावा चलता रहता है। यही उनकी चालाकी है। चार-पाँच घंटे का कार्यक्रम, लाखों रुपये खर्च। बिजली, लाइट, माइक, डीजे, टैक्स – सब अलग से। ये सब आपका पैसा उनका फायदा बनता है। माता-पिता कर्ज. में डूबकर बेटी की शादी करवाते हैं, और ये लोग हँसते हैं। शादी का असली मतलब – संसकार, प्रेम, सादगी, परिवार का मिलन – खो गया है। अब केवल फोटोशूट, डीजे, गहनों और दिखावे की दौड़ बची है। रिश्तेदार पीछे हट गए, परिवार की आत्मीयता गायब। इवेंट मैनेजर, कैटरर और हॉल वाले अब शादी के असली मालिक बन गए हैं। कैटरर्स और बैंकट हॉल वालों को संदेशः आप अरबपति बन रहे हो, पर यह धंधा केवल छल है। लोग अब जाग रहे हैं। जो दिखावे और मनमानी पर भरोसा करेगा, वही आपका शिकार बनेगा। आपके स्टाफ और आपके बैनर के पीछे छुपकर आप लोगों का पैसा लूट रहे हो, लेकिन समय बदलेगा। समाज अब सादगी और मयार्दा की ओर लौट रहा है।

समाज को चेतावनी और सीख

शादी में दिखावा मत करो।
खाना बर्बाद मत करो।
खर्च अपनी सीमा में रखो।
शादी को संस्कार और मयार्दा का प्रतीक बनाओ, ना कि इवेंट या सोशल मीडिया का शो।
सादगी अपनाओ, यही असली खुशी और सम्मान है।
अगर हर परिवार यह समझ लेता है, तो कैटरर्स और हॉल वाले अपनी मनमानी नहीं चला पाएंगे। विवाह अब केवल पैसा कमाने का साधन नहीं रहे, बल्कि संस्कार और सादगी का प्रतीक बने। जो लोग दिखावे और खर्च में बहकेंगे, वही पछताएंगे।

याद रखो: दिखावा छोड़ो, मर्यादा अपनाओ, सादगी अपनाओ।
शादी व्यापार नहीं, संस्कार है। सादगी में ही असली शक्ति और समाज की असली शान है।

नितिन जैन
संयोजक – जैन तीर्थ श्री पार्श्व पद्मावती धाम, पलवल (हरियाणा)

"कायस्थ सांस्कृतिक एंव जागृति मंच" जोधपुर द्वारा 83 वर्षीय प्रेमसखी माथुर सम्मानित

जोधपुर. शाबाश इंडिया

कायस्थ सांस्कृतिक एंव जागृति मंच जोधपुर की तरफ से अध्यक्ष नन्दलाल माथुर द्वारा माला पहनाकर, शौल ओढ़ाकर सम्मान पत्र भेंट किया गया। इस अवसर पर अनिल माथुर, दाऊ माथुर (सुनील) एंव अन्य पदाधिकारी गण उपस्थित रहे । अध्यक्ष ने 83 वर्षीय प्रेमसखी माथुर की तहे-दिल से तारीफ की। श्रीमती प्रेमसखी लम्बे समय से समाज के उत्थान के लिए कार्य कर रही है । उन्होने समाज मे फैली अनेक कुरितियो के खिलाफ आवाज उठाई जिसमे प्रमुख है 'दहेज प्रथा' एंव बाल विवाह। इस मौके पर उनके पुत्र अनिल माथुर एंव पुत्र वधु लज्जु माथुर भी उपस्थित थी । प्रेमसखी ने इस सम्मान के लिए समाज एंव पदाधिकारीयो को धन्यवाद दिया एंव आगे भी सामाजिक कार्यो में सक्रिय भाग लेने का विश्वास दिलाया । प्रेमसखी ने अनेक भजन कीर्तन की पुस्तके भी लिखी एंव निशुल्क वितरित की है ।

आपदा प्रबंधन के लिए आईआईटी मंडी को टाटा ट्रस्ट्स से बड़ा अनुदान

मंडी. शाबाश इंडिया

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) मंडी, जो देश के अग्रणी द्वितीय पीढ़ी के आईआईटी में से एक है, ने गर्वपूर्वक घोषणा की है कि उसे टाटा ट्रस्ट्स से एक प्रतिष्ठित अनुदान प्राप्त हुआ है अपने दूरदर्शी परियोजना के लिए – ''टाटा ट्रस्ट्स समर्थित ऑगमेंटेड फैसिलिटीज फॉर एम्पावरिंग रेजिलिएंस इन हिमालयन हिल्स (टाटा ट्रस्ट्स सेफर हिल्स)'' आईआईटी मंडी के निदेशक प्रो. लक्ष्मिधर बेहेरा ने कहा, ''हाल ही में हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में भूस्खलन और बाढ़ से हुई तबाही ने हमें लचीले तंत्रों की तत्काल आवश्यकता की याद दिलाई है। टाटा ट्रस्ट्स के उदार सहयोग से हम अत्याधुनिक अनुसंधान को आगे बढ़ाएंगे, सामुदायिक लचीलापन को मजबूत करेंगे, और ऐसे नवाचारी समाधान विकसित करेंगे जो जीवन और आजीविका दोनों की रक्षा करेंगे। आईआईटी मंडी के संसाधन सृजन एवं पूर्व छात्र संबंध डीन प्रो. वरुण दत्त ने कहा, यह सहयोग आईआईटी मंडी को भूस्खलन जोखिम में कमी और हिमालयी समुदायों में लचीलापन बढ़ाने के लिए प्रभावशाली समाधान विकसित करने में सक्षम बनाएगा।'' सी डीएआर की चेयरपर्सन डॉ. कला वी. उदय ने कहा, सीडीएआर में हमारा मिशन उन्नत तकनीकों को सतत प्रथाओं के साथ जोड़कर लचीलापन विकसित करना है। टाटा ट्रस्ट्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सिद्धार्थ शर्मा ने कहा, आईआईटी मंडी के साथ सेफर हिल्स पहल के तहत यह सहयोग उसी विश्वास का प्रतीक है – जो विज्ञान, सामुदायिक अंतर्दृष्टि और संस्थागत क्षमता को जोड़कर ऐसे व्यावहारिक समाधान तैयार करेगा जो जलवायु जोखिमों से सबसे अधिक प्रभावित लोगों की रक्षा करेंगे।

नीचे से ऊपर उठ कर जिंदगी को ऊंचाई देने की सभी को इच्छा होती है: राष्ट्र संत मुनि पुगंव श्री सुधासागरजी महाराज

समयसार शिक्षण प्रशिक्षण शिविर का पुरस्कार वितरण के साथ समापन। विमोचन के साथ दिपावली पूजन पत्रिका को हर घर में भेजा जाएगा: विजय धुर्रा

अशोकनगर. शाबाश इंडिया

नीचे से ऊपर उठ कर जिंदगी को ऊंचाई देने की सभी को इच्छा होती है हर क्षेत्र में ऊपर उठना ये सभी की इच्छा होती है जब कोई अमीर से गरीब बन गया तो उसका जीवन बहुत कठिन हो जाता है। दुख से सुख के दिन आते हैं सुख से दुःख के आते हैं तो व्यक्ति फूला नहीं समाता इसका एक ही कारण है कि सुख से दुःख के दिन व्यक्ति को देखने पड़ते हैं जब हमारे जीवन में जरूरत थी तब हमने खुब समर्पण दिखाया लेकिन अपना स्वार्थ पूरा होते ही हम भूल गए सुबह का मन्दिर जाना तो ठीक है लेकिन जब आप शाम को मन्दिर जातें हैं ये दिन भर में जो सुख मिला उसका आभार है। जब बच्चे को मां की जरूरत थी उसे गोदी मिलीं बच्चा बड़ा हो गया और वह समर्थ हो कर अपने मां बाप को छोड़ कर चला जाता हैं उस से निकृष्ट कोई नहीं हो सकता उक्त आश्य केउद्गार सुभाषगंज मैदान विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए राष्ट्र संत मुनि पुगंव श्री सुधासागरजी महाराज ने व्यक्त किए।

पंचायत कमेटी ने किया दीपोत्सव का पत्रिका किया विमोचन

इसके पहले जैन समाज के मंत्री विजय धुर्रा ने कहा कि भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण महोत्सव एवं गौतम स्वामी को केवल ज्ञान की प्राप्ति हुआं इस महापूजन पत्रिका का विमोचन किया जा रहा है हम इस पत्रिका को अपने घरों उत्तर पूर्व की दिशा में अपने पूजन कक्ष रख कर

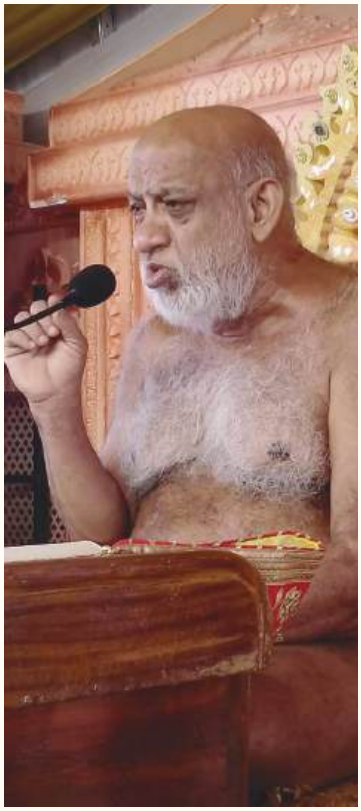

सकेंगे इस पत्रिका का विमोचन इस दौरान जैन समाज अध्यक्ष राकेश कासंल महामंत्री राकेश अमरोद कोषाध्यक्ष सुनील अखाई उपाध्यक्ष अजित बरोदिया प्रदीप तारई राजेन्द्र अमन मंत्री शैलेन्द्र श्रागर मंत्री विजय धुर्रा मंत्री संजीव भारल्लिय मीडिया प्रभारी अरविंद कचनार आडिटर सजंय के टी थूवोनजी अध्यक्ष अशोक जैन टींगू मिल महामंत्री मनोज भैसरवास द्वारा किया गया।

समयसार परीक्षा का पारितोषिक वितरण किया गया

परम पूज्य निर्यापक श्रमण राष्ट्र संत मुनि पुगंव श्री सुधासागरजी महाराज के सान्निध्य में चल रहे दस दिवसीय समयसार शिक्षण प्रशिक्षण शिविर का समापन समारोह आयोजित किया गया इस दौरान समय सार पर परीक्षा का आयोजन किया गया। इसमें शिविर टांपर बालक वर्ग में पारस कुमार जैन शिविर टांपर बालिका वर्ग से सिमी जैन ने प्राप्त किया। शास्त्री वर्ग तृतीय से पहले स्थान विजय कुमार जैन द्वितीय स्थान अतिशय जैन तृतीय स्थान आगम जैन बालिका वर्ग से आयुषी जैन द्वितीय स्थान प्राप्ति जैन तृतीय स्थान मिनि जैन शास्त्री वर्ग द्वितीय पहला स्थान साक्षी जैन द्वितीय स्थान मिति शास्त्री तृतीय स्थान आर्थी जैन अरिहंत जैन सौरव जैन अरिहंत जैन को प्राप्त किया। वहीं शास्त्री वर्ग प्रथम वर्ष में पहल स्थान आंशिका जैन द्वितीय स्थान वंशिका जैन तृतीय स्थान पार्थी जैन बालक वर्ग में प्रथम स्थान प्रसन्न जैन द्वितीय स्थान विवेक जैन तृतीय अभिनंदन जैन को शिविर पुयर्जक परिवार हरीश कुमार निर्मल कुमार मिर्ची परिवार के साथ जैन समाज अध्यक्ष राकेश कासंल महामंत्री राकेश अमरोद कोषाध्यक्ष सुनील अखाई उपाध्यक्ष अजित बरोदिया प्रदीप तारई राजेन्द्र अमन मंत्री शैलेन्द्र श्रागर मंत्री विजय धुर्रा मंत्री संजीव भारल्लिय मीडिया प्रभारी अरविंद कचनार आडिटर सजंय के टी

थूवोनजी अध्यक्ष अशोक जैन टींगू मिल महामंत्री मनोज भैसरवास दारा सम्मान किया गया।

लोभ के कारण पैसे कमाने की नियत से जव व्यक्ति पिछले सब कुछ भूल जाते हैं

उन्होंने कहा कि लोभ के कारण पैसे कमाने की नियत से जव व्यक्ति पिछले सब कुछ भूल जाते हैं ऐसे लोग कृतनि कह लाते हैं मात्र थोड़ा मान सम्मान नही मिला आपकी बात नहीं सुनी गई तो आप अपनो से रूठ जाए तो आप अपने कर्तव्य से पीछे हो रहे हैं जीवन में सस्कार का सबसे बड़ा महत्व है कि जो हमने सस्कार लिए है उन्हें अपने जीवन में वनाये रखना है हमें अपनी उप जाति को भूलना होगा हमारी कौन जाति नहीं होगी वस हम जिस कुल में जन्मे हैं उसे याद रखना है हम जैन कुल में जन्मे है तो जैन ही रहे ये संस्कार अपन को लाना है यदि हमने ये बीड़ा उठा लिया तो हम सम्पूर्ण भारत वर्ष के समाज को एक कर सकेगें मान हो आपमान हो हम अपनी वलदियत नहीं वदले हमें कुंद कुंद की मूल आमना के अनुसार चलना है।

दिगंबर जैन महासमिति राजस्थान अंचल एवं महिलांचल द्वारा महासमिति के 50वें स्थापना दिवस के अवसर पर वृक्षारोपण एवं वरिष्ठ जनों का किया सम्मान

जयपुर. शाबाश इंडिया

दिगंबर जैन महासमिति राजस्थान अंचल एवं महिलांचल द्वारा महासमिति के 50 वे स्थापना दिवस के अवसर पर वृक्षारोपण एवं वरिष्ठ जनों का सम्मान किया। महिलांचल अध्यक्षा श्रीमती शकुंतला विनायक्या ने बताया कि श्री महावीर दिगंबर जैन मंदिर, मुरलीपुरा में दिगंबर जैन महासमिति राजस्थान अंचल एवं महिलांचल राजस्थान द्वारा घने छाया दार पौधे मुरलीपुरा पार्क, मुरलीपुरा जैन मंदिर में महासमिति के 50 वर्ष के शानदार सफर के उपलक्ष में लगाए। कार्यक्रम अंचल अध्यक्ष अनिल जैन IPS, अंचल महामंत्री महावीर बाकलीवाल, कार्यक्रम मुख्य समन्वयक राजेश बड़जात्या के दिशा निर्देश एवं मार्ग दर्शन में किया गया। महिलांचल मंत्री श्रीमती सुनीता जैन ने अवगत कराया कि कार्यक्रम में पौधारोपण एवं वरिष्ठ लोगों का सम्मान किया गया। महिलांचल कोषाध्यक्ष उर्मिला जैन ने बताया कि कार्यक्रम के मुख्य समन्वयक राजेश बड़जात्या, मन्दिर प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष धर्म चंद जैन, मंत्री नीरज जैन, सम्यकग्रुप के. संरक्षक महावीर विनायक्या, डॉ भाग चंद जैन, श्रीमती मिश्रा देवी छाबड़ा,मुरली पूरा ईकाई संरक्षक रेखा जैन अध्यक्ष संगीता जैन मंत्री निशा जैन, रचना वैद, सीमा बड़जात्या, श्रीमती विमला बिलाला, सुरेश जैन अलवरवाले, पंकज जैन , निशा जैन तथा अनेक महासमिति के सदस्य गणों की ओजस्वी उपस्थिति रही। अंत में सभी उपस्थित सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

विद्यालय में इन्वेस्टिचर सेरेमनी एवं दीवाली सेलिब्रेशन कार्यक्रम

रोहित जैन. शाबाश इंडिया

नसीराबाद। केंद्रीय विद्यालय नसीराबाद के प्राथमिक विभाग में इन्वेस्टिचर सेरेमनी एवं दीवाली सेलिब्रेशन का आयोजन बड़े हर्षोल्लास के साथ किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रधानाचार्य रमेश चंद्र मीणा जी और प्रधानाध्यापक अजय कुमार जी द्वारा दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना के साथ हुआ। इन्वेस्टिचर सेरेमनी के अंतर्गत विद्यालय के हेड बॉय, हेड गर्ल, हाउस कैप्टन तथा अन्य पदाधिकारियों को बैज प्रदान कर उनकी जिम्मेदारियों से अवगत कराया गया। इसमें प्राथमिक विभाग के हेड बॉय हर्षित कश्यप कक्षा पांचवी 'अ' तथा हेड गर्ल भाविका पारीक कक्षा पांचवी ह्यसह्ल की छात्रा को बनाया गयो बच्चों ने आत्मविश्वास और अनुशासन का परिचय देते हुए अपने पद की शपथ ली। इसके पश्चात दीवाली सेलिब्रेशन कार्यक्रम के अंतर्गत दिया डेकोरेशन और रंगोली मेकिंग प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों ने अत्यंत रचनात्मकता और उत्साह के साथ सुंदर-सुंदर दीये सजाए और रंग-बिरंगी रंगोलियाँ बनाई। विद्यालय का वातावरण रंगों और प्रकाश से दमक उठा। कार्यक्रम के अंत में विजेताओं को सम्मानित किया गया और सभी विद्यार्थियों को दीवाली का संदेश दिया गया कि वे 'हरित और सुरक्षित दीवाली' मनाएँ। इस कार्यक्रम का संचालन अजय कुमार मुख्याध्यापक के निर्देशन में श्रीमती रेखा मीणा और श्रीमती विनिता पारीक अध्यापिकाओं द्वारा किया गया और सफलतापूर्वक संपन्न हुआ और बच्चों ने आनंद एवं गर्व के साथ इसमें भाग लिया।

स्वाध्याय के बिना जीवन की इच्छाएं पूर्ण नहीं हो सकती: मुनि अनुपम सागर

संसार का दुःख भी बन सकता हमारी विरक्ति का कारण: मुनि निर्मोहसागर

श्री महावीर दिगम्बर जैन सेवा समिति के तत्वावधान में संयम भवन में प्रवचन

भीलवाड़ा. कासं

इंसान अपने जीवन में इच्छित वस्तुओं को पाने के लिए कई तरह के जतन करता है इसके बावजूद उसे सब कुछ प्राप्त नहीं हो पाता है क्योंकि वह जानता बहुत कुछ है लेकिन मानता किसी की नहीं है। वह विद्या का अभ्यास नहीं करता जबकि कुछ पाने के लिए निरन्तर स्वाध्याय करना जरूरी है। ये विचार श्री महावीर दिगम्बर जैन सेवा समिति के तत्वावधान में शास्त्रीनगर हाउसिंग बोर्ड स्थित श्री सुपार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में वर्ष 2025 का चातुर्मास कर रहे पट्टाचार्य आचार्य विशुद्धसागर महाराज के शिष्य मुनि अनुपम सागर ने रविवार को संयम भवन में प्रवचन में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि अभी जो कुछ प्राप्त हो रहा है वह पिछले भव के विद्याभ्यास का ही प्रतिफल है लेकिन एक बूंद से नहीं सतत बूंदों के एकत्रितकरण से ही घड़ा भरता है। जब तक निरन्तर धर्म की साधना आराधना नहीं करेंगे ओर स्वाध्याय को जीवन का अंग नहीं बनाएंगे हमारा आत्मकल्याण नहीं हो सकता। धर्मसभा में मुनि निर्मोहसागर महाराज ने कहा कि दुःख भी हमारी मुक्ति का कारण बन सकता है। हम दुःख ओर विषयों के जंजाल में ही फंसे रहते है फिर भी संसार से विरक्ति नहीं हो पा रही

है। इस रहस्य को समझने के लिए निर्ग्रन्थ गुरूओं का सानिध्य आवश्यक होता है ओर स्वाध्याय भी करना पड़ता है। जो इस रहस्य को समझ लेता है उसे संसार से विरक्ति हो जाती है ओर आत्मकल्याण के पथ पर अग्रसर हो जाता है। श्री महावीर दिगम्बर जैन सेवा समिति के अध्यक्ष राकेश पाटनी ने बताया कि मुनि ससंघ के सानिध्य में शुक्रवार से रविवार तक सुबह 5 से 7 बजे तक सिद्ध चक्र विधान का आयोजन हो रहा है। इसमें कई श्रावक श्राविकाएं उत्साह के साथ सहभागिता निभा रहे है। इस आयोजन के मंगलकलश भी पंजीकृत किए जा रहे है। वर्षा योग के मंगल कलशों का रविवार 19 अक्टूबर को प्रवचन के बाद महाराजश्री के करकमलों से वितरण किया जाएगा। समिति के मीडिया प्रभारी भागचंद पाटनी ने बताया कि 26 अक्टूबर को पीछी परिवर्तन एवं सम्मान समारोह दोपहर 1 बजे से शास्त्रीनगर स्थित सूर्यमहल होटल में होगा। पूज्य मुनि ससंघ के सानिध्य में सांयकालीन गुरूभक्ति एवं महाआरती का कार्यक्रम यथावत चल रहा है। धर्मसभा का संचालन पदमचंद काला ने किया। नियमित प्रवचन प्रातः 8.30 बजे से हो रहे हैं।

भागचंद पाटनी: मीडिया प्रभारी
मो.9829541515

शाबाश इंडिया ई-पेपर

प्रस्तुत करते हैं

दीपावली विशेषांक

दीपावली के अवसर पर शाबाश इंडिया
सोमवार 20 अक्टूबर, 2025
को 'दीपावली विशेषांक' प्रकाशित करने जा रहा है।
इसमें व्यापार-व्यवसाय, अर्थ जगत, राजनीति एवं सम-सामयिक विषयों पर विश्लेषणात्मक आलेख प्रकाशित किए

विज्ञापनदाताओं के लिए एक सुनहरा अवसर

उच्च स्तरीय ब्रांडिंग
राज्य के प्रमुख शहरों में प्रबुद्ध पाठक वर्ग होने से उच्च स्तरीय ब्रांडिंग का एक बेहतरीन विकल्प है।

टारगेटेड एडवरटाइजिंग
अधिकतम पाठक मध्यम, उच्च मध्यम एवं उच्च आय वर्ग के हैं, जो विज्ञापन के लिहाज से टारगेटेड कस्टमर होते हैं।

विश्वसनीयता
शाबाश इंडिया की निष्पक्ष व तथ्यपरक खबरों से बनी छवि इसके विज्ञापनदाता की विश्वसनीयता को भी बढ़ाती है।

दीपावली विशेषांक में विज्ञापन एवं आलेख प्रकाशित करवाने के लिए सम्पर्क करें:

राकेश गोदिका, प्रधान सम्पादक
मोबाइल: 9414078380, 9214078380
rakeshgodika@gmail.com, shabaasindia@gmail.com

वीर निर्वाण संवत 2552, मोक्ष महल का वैभव प्रदाता ज्योति पर्व दीपावली

इंजी. अरुण कुमार जैन

दीपावली पर्व का नाम आते ही संपूर्ण विश्व के भारतीयों और उनके अपनों के मन में प्रेम, हर्ष उल्लास व उमंग के भाव स्वतः इंद्रधनुष से आकर लेने लगते हैं. घरों की पुताई, सफाई,दीवारों पर आलेखन, गाँव में पुराने घरों की गोबर से लिपाई,पोतनी से सुंदर ढिक बनाना, दीवारों पर सुंदर-सुंदर आकृतियां,नए वस्त्र, पूजन,खील बतासे, मिठाइयां, सभी अपनों के घर जाना, दीप जलाना,एक दूसरे को बधाई देना सब कुछ अनुरागी लगता है. विश्व के जैन संप्रदाय में इन सब के साथ जुड़ जाता है,उषा काल के समय जिन मंदिर में जाकर तीर्थंकर महावीर की मूर्ति के समक्ष पूजन करना, निर्वाण कांड पढ़ना, प्रभु को निर्वाण लाडू अर्पित करना, साथ ही अपने घरों कार्यालयों या व्यापारिक प्रतिष्ठानों में दीप जलाकर तीर्थंकर महावीर के प्रधान गणधर श्री गौतम स्वामी जी को केवल ज्ञान मिलने के उपलक्ष में दीप जलाकर हर्ष की अभिव्यक्ति करना. हम भारतीय भगवान राम के वनवास से अयोध्या वापिस आगमन के उपलक्ष में व तीर्थंकर महावीर के मोक्ष कल्याण के उपलक्ष में,उनके प्रधान गणधर पूज्य श्री गौतम स्वामी को केवल ज्ञान मिलने के हर्ष की अभिव्यक्ति के रूप में दीपावली पर्व मानते हैं. तीर्थंकर महावीर जिनका जन्म आज से 2624 वर्ष पूर्व उत्तरी बिहार के वैशाली प्रान्त के कुंडलपुर राज्य में राजा सिद्धार्थ की महारानी त्रिशला के घर में हुआ था. उनके जन्म के 15 माह पूर्व से ही, राजा सिद्धार्थ के महलों में रत्नों की वर्षा होने लगी थी. मां त्रिशला ने गर्भधारण के पूर्व 16 स्वप्न देखे, जिनका फल राजा सिद्धार्थ ने बताया कि उनके यहां जन्म लेने वाला पुत्र सर्वश्रेष्ठ गुणो से संपन्न,धीर, गंभीर तो होगा ही अपने असीम तप से मोक्ष पद को प्राप्त कर संपूर्ण मानवता को सत्य, अहिंसा, तप, त्याग, अपरिग्रह से विश्व विजय, असीम शांति व सच्चे सुख पाने का पथ भी प्रशस्त करेगा. वर्धमान महावीर एक श्रेष्ठ राजकुमार की तरह सभी गुणो से युक्त थे, असीम वैभव के बीच भी उन्हें लगा कि सच्चा सुख सिर्फ साधना सेवा,अपरिग्रह में है.32 वर्ष की युवावस्था में वे गृह त्याग करके दिगंबर संत बन गए. उन्होने लगातार 12 वर्ष तक सारे देश में कठिन तपस्या की.वे जंगलों, शमशानों अटवी, हिंसक पशुओं के मध्य निडरता से अकेले भ्रमण करते रहे. 12 वर्ष के तपस्या काल में उन्होंने मात्र 365 दिन भोजन ग्रहण किया. यानि कि हर बारहवें दिन भोजन, यानि 11 दिन तक पानी भी नहीं पिया. त्याग, तपस्या, साधना, करुणा के माध्यम से जन-जन को दुनिया भर के दुखों से सहज ही मुक्ति पाने का पथ वीर प्रभु ने बताया. उनके तपस्या काल में उनका साक्षात्कार हिंसक सिंह,चीते, अजगर, डाकू लुटेरे, शिकारी और दानवों से निरंतर हुआ, उनके महान व्यक्तित्व से प्रभावित होकर सभी हिंसक दुराचारियों ने अपनी व्यसनों को त्यागा व वे श्रेष्ठ प्राणी बन गए. उनके तपस चरण काल के ऐसे हजारों प्रेरक संस्मरण हमें विभिन्न पुराणों में मिलते हैं. केवल ज्ञान प्राप्ति के पश्चात राजगृही के विपुला चल पर्वत पर भगवान की प्रथम समोसारण सभा आयोजित हुई.इसको इंद्र के आदेश से कुबेर ने असीम वैभव से सुसज्जित किया,समवसरण में सारी सृष्टि के जीव धारी उपस्थित थे. लंबे समय तक मौन रहने के पश्चात उनके प्रथम श्रेष्ठ शिष्य गौतम गणधर स्वामी के आने से ही उनकी विश्व कल्याणी दिव्य वाणी विस्तारित हुई. कहते हैं उनकी देशना विश्व के सभी प्राणी अपनी अपनी भाषा में सहज जान लेते थे. अगले 30 वर्षों तक वीर प्रभु ने समग्र मानवता को जैन दर्शन के पावन उपदेशों से लाभान्वित किया व सबके कल्याण का पथ बताया. कार्तिक बदी अमावस्या के दिन आज से 2552 वर्ष पूर्व उनको मोक्ष पद मिला. जन्म-मरण के बंधन से मुक्त होकर वे सिद्ध शिला पर प्रतिष्ठित हो गए जो हर प्राणी का अंतिम लक्ष्य है. गौतम गणधर स्वामी को जब प्रभु के मोक्ष गमन का समाचार मिला तो वह शोकाकुल हो गए,30 वर्ष तक प्रभु की छाया सदस रहने वाले उनके अनुरागी शिष्य को, प्रभुवाणी सुनाई पडी, प्रिय गौतम, शोक व मोह दोनों ही त्याज्य हैं, मैं तो सदैव तुम्हारे साथ हूं, एक पद प्रदर्शक की तरह. गौतम स्वामी मोह मूर्छा से निकले और उन्हें केवलज्ञान की प्राप्ति हुई जो मोक्ष महल जाने का सोपान है. पावापुरी बिहार में प्रभु का अंतिम संस्कार किया गया, उनके लाखों भक्तों ने उस स्थान की पावन धूल को अपने दिव्य पवित्र स्थान में ले जाने के लिए एकत्र किया, फल स्वरुप उनके अंतिम संस्कार स्थल पर एक विशाल सरोवर स्वत बन गया,जहां वर्ष भर सुंदर लाल कमल खिले रहते हैं. वहीं सरोवर के मध्य में एक भव्य मंदिर में प्रभु के चरण स्थापित कर जन-जन का पूज्य तीर्थ स्थल बन गया. आज भी दीपावली के दिन हजारों लाखों भक्त उषा बेला में पावापुरी में जाकर प्रभु के चरणों में निर्वाण लाडू अर्पित कर अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हैं। राजस्थान में भी श्री महावीर जी में एक ऐसा अनुपम तीर्थ स्थल है जहां खेत में टीले से निकली भगवान महावीर की चमत्कारी मूर्ति सैकड़ो सालों से स्थापित है, जिसके दर्शन मात्र से ही असीम शांति व आनंद की प्राप्ति होती है, व मन के सारे कलुष, विकार, अवसाद स्वतः समाप्त हो जाते हैं. यहाँ लाखों तीर्थयात्री हर वर्ष दर्शन करने आते हैं. भगवान महावीर जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर है, जिनका जीवन स्वयं प्रेरक व पथ प्रदर्शक है. एक वस्त्र भी उनकी देह पर नहीं रहा, भीषण गर्मी भयंकर शीत या घनघोर वर्षा , कैसा भी मौसम हो वे सदैव दिगंबर मुद्रा में रहे, सहज रहे, चलते रहे, नंगे पांव. भोजन लेने के लिए पाणीपात्र ही माध्यम था, खड़े होकर आहार लेना वह भी जब,जब बनाने वाले पूर्ण शुद्ध तरीके से भोजन बनाएं वअपने द्वार पर आकर भक्तिपूर्वक उन्हें आमंत्रित करें, साथ ही उनके मन में ली गई प्रतिज्ञा भी पूरी हो.बालों को भी अपने दोनों हाथों से उखाड़ने वाले महावीर व उनके अनुयाई संत आज भी उनके जीवन दर्शन को अपनाते हैं. जीवन भर, एक स्थान से दूसरे स्थान चलते जाना, किसी आश्रम विशेष के प्रति मोह उत्पन्न नहीं करता.धरा का हर स्थल उन्हें अनुरागी है व संसार के सभी प्राणी उनके लिए प्रिय हैं. दीपावली के पावन दिन पर उषा बेला में प्रभु के श्री चरणों में अपनी श्रद्धा निर्वाण लाडू चढ़ाकर दीप जलाकर व्यक्त की जाती है. कार्तिक वदी अमावस्या की शाम सभी अपने स्थान पर दीपक जलाकर पूज्य गौतम स्वामी जी के केवल ज्ञान प्राप्ति का आनंद बनाते हैं. विश्व भर में सभी जैन अनुयाई दीपावली पर्व मानते हैं, जैन पठाके नहीं फोड़ते, बम नहीं दागते ताकि छोटे छोटे जंतुओ, प्राणियों के जीवन की रक्षा की जा सके. यह पर्व विश्व भर में विश्व भर के लोगों के द्वारा भी मनाया जाता है क्योंकि इसमें प्रेम है, अनुराग है, इसने है करुणा है, सेवा है, मैत्री है वात्सल्य है, व विश्व बंधुत्व भी समाहित है. संसार भर में असीम आलोक सदैव प्रसारित रहे व हर प्राणी के मन सदैव आलोकित रहें, सभी के मन से भय, वेदना, आशंका क्रोध, काम,हिंसा, प्रतिशोध का तिमिर समाप्त हो व नेह, प्रेम, सहयोग की दिव्य ज्योति ज्योतिष रहे, इसी कामना के साथ ज्योति पर्व की हार्दिक बधाइयां.

इंजी. अरुण कुमार जैन,
अमृता हॉस्पिटल, सेक्टर 88
फरीदाबाद, हरियाणा.
मो. 7999469175.

तीर्थंकर कुल का मनुष्य जीवन कीमती रत्न है इसकी कर्म रूपी चोरों से सुरक्षा करना चाहिए : आचार्य श्री वर्धमान सागर जी

टोंक. शाबाश इंडिया

श्री आदिनाथ जिनालय में आप श्री शांतिनाथ मंडल विधान की पूजन भक्ति भाव से कर रहे हैं। पंचकल्याणक की धार्मिक क्रियाएं भी उत्साह से करना चाहिए कुछ समय पूर्व श्री पारसनाथ भगवान की नूतन प्रतिमा नगर में आई है अभी उनमें गुणों का आरोपण नहीं किया गया है पंच कल्याणक के दौरान सूरी मंत्र द्वारा उस प्रतिमा को प्रतिष्ठित किया जावेगा ।भगवान के प्रतिदिन दर्शन, अभिषेक , पूजन ,ध्यान, स्वाध्याय निराकुलता पूर्वक करना चाहिए। मनुष्य जीवन बहुत ही दुर्लभ है। आपको वितरागी तीर्थंकर भगवान का कुल प्राप्त हुआ है। यह सौभाग्य के पल है, जीवन में प्रतिदिन उम्र बढ़ने के साथ आयु भी कम होती जाती है ,यह मंगल देशना पंचम पट्टाधीश वात्सल्य वारिधी आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज ने श्री आदिनाथ जिनालय नसिया में शांतिनाथ विधान के पूजन के समय प्रकट की। राजेश पंचोलिया के अनुसार आचार्य श्री ने प्रवचन में आगे बताया कि मानव जन्म बहुत ही कठिनाई से संचित पुण्य से प्राप्त होता है दिन प्रतिदिन आपकी उम्र कम होती जा रही है आयु बढ़ने के साथ जीवन भी प्रतिपल कम होता जाता है ।अब क्या करना है ,इसका चिंतनभगवान को देखकर करना चाहिए कि भगवान ने जो प्राप्त किया है वह आप कैसे प्राप्त करसकते हैं भगवान कीभक्ति करने से कर्मों कीनिर्जरा होती है ।कर्मों का हर पल भय, डर होना चाहिए नवीन कर्मों का आश्रव कैसे रुकेगा , धार्मिक विधान कार्य करने से कर्मों का क्षय होता है ।हर व्यक्ति भगवान से सुख की कामना करता है धर्म कार्य करने से सुख मिलता है भगवान की चरण शरण से ही मुक्ति मिलती है इसलिए जीवन में पुण्य अर्जित बढ़ाने का कार्य करना चाहिए ।भगवान के शरण में चिंतन करें ।श्री पारसनाथ भगवान का पंच कल्याणक होना है पारसनाथ भगवान और कमथ पूर्व पर्याय में सगे भाई थे पर कमथ ने जीव ने 10 भवों तक पारसनाथ भगवान के जीव पर उपसर्ग किए किंतु पारसनाथ भगवान के जीव ने सभी उपसर्गों को समता भाव से सहन किया ।जिस प्रकार कीमती रत्न को आप तिजोरी में सुरक्षित करते हैं उसी प्रकार मनुष्य जीवन भी कीमती रत्न है इसकी भी सुरक्षा कर्मों से करना चाहिए। भगवान की शरण का लाभ लेना चाहिए। रमेश काला के अनुसार आचार्य श्री वर्धमान सागर जी के संघ सानिध्य में आगामी 7 नवंबर से 12 नवंबर तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा पुराने टोंक के नूतन जिनालय के लिए होगी ।आज पंच कल्याणक प्रतिष्ठा समिति के सभी पात्रों और समाज के पदाधिकारियों महिला पुरुषों ने श्री शांतिनाथ मंडल विधान की पूजन की सभी ने आचार्य श्री की पूजन भी की।

राजेश पंचोलिया इंदौर

आश्चर्य परन्तु सत्य

कहां मिलेंगे हमें विमल पद कलम सर्व दुख हारा उन्हें मृत्यु ने हमें मृत्यु के समाचार ने मारा

पारस जैन 'पार्श्वमणि' पत्रकार कोटा

कोसमा (एटा)। सुप्रसिद्ध भजन गायककार स्वर्गीय रविंद्र जैन जी का गाया हुआ वो भजन 'कहां मिलेंगे हमें विमल पद कलम सर्व दुख हारा उन्हें मृत्यु ने हमें मृत्यु के समाचार ने मारा' मुझे याद आता है। जिस भी जैन बंधु ने ये भजन नहीं सुना हो वो एक बार जरूर सुने। जी हा मैं बात कर रहा हूं उस छोटे से कोसमा कस्बे की जहां पर तीन हजार के आस पास की आबादी है जिनमें कुशवाह बघेल ओ बी सी समाज के लोग रहते है। ये उत्तरप्रदेश के जिला एटा के अंतर्गत कोसमा कस्बा आता है। सबसे बड़ी ओर महान आश्चर्य की बात ये है कि यहां पर एक भी जैन समाज का घर नहीं है। यहां एक भगवान 1008 नेमीनाथ भगवान का प्राचीन जैन मंदिर है। इस मंदिर में एक छोटी बेदी पर भव्य अतिशय युक्त छोटी सी मनोहारी प्रतिमा भगवान नेमीनाथ की विराजमान है। उसी के दो फलांग दूरी पर एक मंदिर जिसमें वात्सल्य मूर्ति आचार्य 108 विमल सागर जी महाराज की मूर्ति स्मारक स्वरूप दूसरी साइड बाजू में हनुमान जी की मूर्ति , शिव पार्वती लिंग भी विजातीय लोगो द्वारा स्थापित किया है। ये सर्व धर्म सम भाव का प्रेरक कहा जा सकता है। यहां पर प्रतिदिन कस्बे के लोगों ओर महिलाओं द्वारा सायंकाल भक्ति भाव से भजन एवं चालीसा करते देखा जा सकता है। मां अम्बा जी की मूर्ति भी विराजमान है। आचार्य विमल सागर जी महाराज की आरती भी लिखी हुई है। लोग अपनी बाधाएं दूर करने के लिए आरती करते है। लोगो में आचार्य श्री के प्रति अटूट आस्था ओर विश्वास है। इस मंदिर का शिलान्यास आचार्य 108 चैत्य सागर जी महाराज के पावन सानिध्य में श्री आर के जैन बॉम्बे द्वारा किया गया है। परम पूज्य आचार्य 108 चैत्य सागर जी महाराज का वषायोग आगरा में हर्षोल्लास के वातावरण में चल रहा है उन्हीं की मंगल प्रेरणा और निर्देशन में कोसमा कस्बे में आचार्य विमल सागर जी महाराज की स्मृति भव्य मंदिर का कार्य द्रुत गति से चल रहा है। नवंबर महीने में पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव भी प्रस्तावित है। कोसमा में मंदिर के पास ही एक बड़ी चार मंजिला धर्म शाला उपलब्ध है। एक सर्व सुविधायुक्त चिकित्सालय जिसमें प्रतिदिन 300 मरीज अपने इलाज के लिए आते है। आधुनिक मशीनों द्वारा जटिल ऑपरेशन सुविधा भी उपलब्ध है। 40 से अधिक दक्ष चिकित्सक टीम मरीजों के इलाज ओर सेवा में रहती है। बहुत ही कम खर्च में समस्त सुविधाएं प्रदान की जाती है। अ. भा. जैन संपादक संघ के तत्वाधान में श्री अखिल जी बंसल के नेतृत्व में इसका निरीक्षण करने का परम सौभाग्य मुझे मिला ये देख कर मेरा मन आचार्य विमल सागर की महाराज के प्रति श्रद्धा से भर गया उनकी याद में आंखे भर आई । गाड़ी में वही भजन कहा मिलेंगे हमें विमल पद कमल सर्व दुख हारा भजन श्रद्धा भक्ति भाव पूर्वक सुनाया। समस्त जैन समाज से मेरा आत्मीय अनुरोध है कि इस परम पुनीत कार्य के लिए आगे आए। जैन समाज में धार्मिक आयोजन बढ चढ़ कर प्रति वर्ष होते है जिनमें करोड़ों की राशि लगाई जाती है। अब शिक्षा ओर चिकित्सा पर जैन समाज को ध्यान देना चाहिए। चिंता मणि रत्न समान दुर्लभ मानव जैन पर्याय में एक बार अवश्य कोसमा धर्मप्राण कस्बे में अवश्य पधारकर दर्शन लाभ लेवे।